Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

मैथिलीशरण गुप्त : नारी भावना

डॉ0 लालजीत राम
असि0 प्रोफेसर– हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
आलापुर, अम्बेडकरनगर, उत्तर
प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 3 Issue 5
Page Number: 77-80
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 15 Oct 2020
Published : 26 Oct 2020

सारांश–मैथिलीशरण गुप्त की नारी में आत्मबल है वह भयभीत नहीं होती। उस पर किये गये अत्याचार एवं अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए तैयार रहती है। महापुरुषों के त्याग के पीछे नारी की छिपी वेदना को सामने लाते हैं और भारतीय संस्कृति के मर्यादाओं की रक्षा करते हैं।

मुख्य शब्द – मैथिलीशरण गुप्त, नारी,भावना, हिन्दी, साहित्य, कवि।

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और ऑखों में पानी।।' 'यशोधरा'।

मैथिलीशरण गुप्त को हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय कवि के रूप गौरव प्राप्त है। उन्होंने अपनी रचनाओं में संस्कारों और संवेदना की पूरी अभिव्यक्ति प्रदान की। सम्पूर्ण भारतीय स्तर पर वे जातीय और सांस्कृतिक विचारधारा के कवियों में प्रथम श्रेणी में स्थित है। जिस समय खड़ी बोली पूर्णरूप से रचना विधा की शुद्ध भाषा नहीं बनी थी, उस समय उन्होंने खड़ी बोली भाषा में रचना कर श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किये। भारत की सांस्कृतिक गरिमा को महत्व देते हुए अपने समय की वेदना को आत्मसात कर वास्तविक स्थिति में दलितों, किसानों और स्त्रियों की वास्तविक पीड़ा को काव्य का विषय बनाया। गुप्त जी अपनी रचनाओं (साकेत, यशोधरा, विष्णुप्रिया) में नारी को महत्त्व देते हुए उसे उपेक्षित होने से बचाने का प्रयास किया है। यहाँ तक कि 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः' कहने वाले दयार्दचित आदिकवि महर्षि बाल्मीकि ने भी सीता के चरित्र को उदात्त एवं सर्वाधिक गौरव प्रदान करने में उर्मिला कही ध्यान से विचलित हो जाती है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी सेवा के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर देने वाले सच्चे राष्ट्र–प्रेमी और साहित्यसेवी थे। उन्होंने अपने लेख ''कवियों की उर्मिलाविषयक उदासीनता'' शीर्षक से एक लेख लिखा, जिसको पढ़कर मैथिलीशरण गुप्त का युवा कवि हृदय अनुप्रेरित और उत्साहित हुआ और वे उपेक्षित नारियों के पुनः उत्थान एवं उद्धार के लिए बीड़ा उठाया। उनके व्यक्तित्व–विकास में सहायता मिली। 'साकेत' के निवेदन में यह स्वीकार किया है–

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

'करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद?
'महावीर' का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद'।[1]

द्विवेदी जी की प्रेरणा से हिन्दी के सर्वमान्य असन्दिग्ध राष्ट्रकवि कहलाए। परवश एवं परतन्त्र नारियों के प्रति अपना दृष्टिकोण रखते हुए उन्होंने विरह विदग्धा उर्मिला की मर्मकथा को साकेत महाकाव्य के माध्यम से वाणी प्रदान की। साकेत की उर्मिला के पति लक्ष्मण भाई राम और भाभी सीता के साथ सेवा करने के लिए वनवास रूप में चौदह वर्षों तक पत्नी उर्मिला से अलग रहकर जीवन व्यतीत किया। इस वेदना–बोध के बावजूद भी मन को समझाती है। गुप्त जी ने लिखा कि–

''अवधि शिला का उर पर गुरुतर भार'
तिल तिल काट रही थी दृग जल ढार।''[2]

रखकर अपने अश्रुनेत्रों से प्रतीक्षारत है। 'उर्मिला को आधार बनाकर उन्होंने अपनी विचारधारा के अनुरूप नारी की प्रतिमा गढ़ी है। उर्मिला जितनी वास्तविकता है, उतनी ही कल्पना भी। गुप्त जी वैष्णव भावनाओं के एक आदर्शवादी कवि हैं। उन पर गॉधी जी के विचारों और जीवन–शैली का गहरा असर हुआ।[3] यथस्थिति को मानवीय धरातल पर लाकर उर्मिला के विरही जीवन को गुप्त जी ने महत्त्व प्रदान किया।

मैथिलीशरण गुप्त नवजागरण के शसक्त कवि हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से उपेक्षित और प्रताड़ित नारी को सामाजिक रुप से अपमानित होने से बचाने का प्रयास किया। देश में स्वतन्त्रता संग्राम का संघर्ष एवं नारी के लिए शताब्दियों से चली आ रही कुप्रथाओं के कारण शोषण का शिकार हो रही थी, जिसे गुप्त जी ने उर्मिला को सुसंस्कृत नारी के रूप में स्वीकार किया है और उर्मिला अपने पारिवारीक जीवन के सन्दर्भ में विचार प्रकट करती हुई कह रही है–

'दो वर्षों में प्रगट करके, पावनी लोक–लीला,
सौ पुत्रों से अधिक जिनकी पत्रियाँ पूतशीला,
त्यागी भी है शरण जिनके, जो अनासक्त गेही,
राजा–योगी जय जनक वे पुण्य देही विदेही।'[4]

रचना के माध्यम से महत्त्व देने का प्रयास किया। 'मैथिलीशरण गुप्त अपने साकेत में एक ओर राम–कथा की उपेक्षिता उर्मिला को काव्य के केन्द्र में स्थान देते हैं और साथ ही साथ दूसरी ओर राम की विमाता, अब तक की लांक्षिता कैकेयी को एक नयी सहानुभूति प्रदान करते हैं। उर्मिला प्रेयसी–पत्नी है, कैकेयी माँ। इन दो चरित्रों में मैथिलीशरण गुप्त ने जैसे भारतीय नारी को उसकी सम्पूर्णता में अंकित कर दिया हो, एक नयी भंगिमा देकर। 'साकेत' के आठवें और नवें सर्ग में जिसके प्रमाण हैं।'[5]

मैथिलीशरण गुप्त अपनी कृत 'यशोधरा' में यशोधरा के विरही जीवन की दारुण कथा से परिपूर्ण है। पति गौतम बुद्ध अपने महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गृह त्याग देते हैं और अर्धांगिनी यशोधरा को निद्रावस्था में छोड़ कर विना आज्ञा लिए चले जाते हैं। इससे यशोधरा अपने को तिरस्कृत और अपमानित अनुभव करती है। नारी के बिना संसार के सृजन में आगे बढ़ना सम्भव नहीं है। ऐसी दशा

में यशोधरा को सिद्धि मार्ग का बाधा मान रहे हैं। वह नियति के सामने विमुख है। यशोधरा विरह वेदना को सहन नहीं कर पाती। वह कह पड़ती है–

''सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी–चोरी गये, यही बड़ा व्याघात,
सखि, वे मुझसे कह कर जाते,
कह, तो क्या वे मुझसे अपनी पथ–बाधा ही पाते?''[6]

यशोधरा के मन में इस बात का दुःख है कि पूरी नारी–जाति का आस्तित्व नहीं है, वे संघर्ष करती हैं और जागरूकता का भाव पूरे नारी समाज के लिए प्रस्तुत करती है और आदर्शवादिता का पालन पूरे जीवन भर करती है और कहती है–

'सिद्धि–मार्ग का बाधा नारी! फिर अभी क्या गति है?
पर उनसे पूछूँ क्या, जिनको मुझसे आज विरति है,
अर्द्ध विश्व में व्याप्त शुभाशुभ मेरी भी कुछ मति है।
मैं भी नहीं अनाथ जगत में, मेरा भी प्रभु पति है।
यदि मैं पतिप्रता तो मुझको कौन भार–भय–भारी?
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।[7]

यशोधरा अपने पुत्र राहुल को साथ में लेकर जीवन बिता रही है। पति के न रहने के कारण उन्हें दोनों दायित्व माता और पिता का निर्वहन करना पड़ा। उसने विरह वेदना के साथ–साथ उनके अन्दर गम्भीरता, अटल विश्वास, पारिवारिक दायित्व और त्याग को सहज रूपी में स्वीकार किया है। वह अपने ससुर को समझाती हुई कहती है–

''तात, सोयो, क्या गये वे उसी का अर्थ है।
खोज हम लाये उन्हें, क्या वे असमर्थ है?

यशोधरा अपने जीवन के अभाव के क्षणों का पार कर चुकी है। उनके तप और त्याग का फल उन्हें प्राप्त हो गया है। पति भिक्षु–शिरोमणि को पाकर धन्य है और पुत्र राहुल को उनकी गोद में देकर एक कुशल नारी का आदर्श प्रस्तुत करती है। भगवान बुद्ध ने (गोपा) यशोधरा के तप और त्याग को आदर्शपूर्वक स्वीकार किया। पूरे नारी समाज की महत्ता को स्वीकार कर उसके स्वाभिमान को महत्व दिया और अपने शब्दों में कहा–'' दीन न हो गोपे, सुनो, हीन, नहीं नारी कभी''। मैथिलीशरण गुप्त 'यशोधरा में पूरे भारतीय नारी समाज में संघर्ष, त्याग और नवीन विचारों की अभिव्यक्ति प्रदान की।

गुप्त जी भारतीय समाज की नारी को दायित्यों को प्रतिष्ठित करते हुए स्थपित किया है। ''विष्णुप्रिया'' मैं नारियों को त्याग, तपस्या एवं परिवार कल्याण के लिए व्रत एवं पतिव्रता होना आवश्यक माना है। यह भारतीय संस्कृति की मान्यताएँ है। विष्णुप्रिया सामान्य गृहिणी है। पतिभक्त भी महाप्रभु चैतन्य के प्रेम धर्म प्रसार हेतु देश कल्याण के लिए गृह त्यागना पड़ा। उनकी पत्नी विष्णुप्रिया को पति वियोग की पीड़ा सहनी पड़ी। वह अत्यन्त कठिन थी। श्रीमहाप्रभु चैतन्य पत्नी

विष्णुप्रिया से प्रेम–धर्म के कल्याण के लिए गृह त्याग के आज्ञा माँगते हैं, तो विष्णुप्रिया समस्त नारी–जाति के लाचारी और विवश्ता का बोध कराती हुई कहती है–

तो क्या करूँ कर ही क्या सकती हूँ और मैं
रो रोकर मरना ही नारी लिखा लाई है।

विष्णुप्रिया अपने पति की भर्त्सना करती हुई करती है–

''कौन योग पूर्ण होगा त्याग कर मुझको?
धर्म के विरुद्ध ही तुम्हारा यह कर्म है।''[8]

मैथिलीशरण गुप्त 'विष्णुप्रिया' के चरित्र को स्वाभिमानी और कुशल गृहिणी के रुप में स्वीकार किया है। जिस समय पति के वैराग्य होने पर उनसे कहती है और सांसारिकता के मोह से दूर जा रहे श्रीमहाप्रभु चैतन्य को समझाती है। स्वयं श्रम करके अपने परिवारिक जीवन सुखमय रूप में जीना चाहती है– ''कर लेंगे हम किसी प्रकार, इतना श्रम जिससे हम दोनों, न हो किसी पर भार।'' विष्णुप्रिया विरहकर जीवन तपस्या के साथ जीती है और तपस्या से निखर कर भक्तिपूर्वक प्रिय की सेवा में समर्पित कर देती है। श्रीमहाप्रभु चैतन्य साधना पूर्णकर घर वापस आते हैं उस समय विष्णुप्रिया अपना सम्पूर्ण दुःख भूलकर प्रेम पूर्वक स्वागत करती है और प्रिया पति के आज्ञा से ईश्वर का ध्यान करती है। महाप्रभु चैतन्य उनकी साधना और त्याग से प्रभावित होकर कहते है–

''हाय! ''प्यारी विष्णुप्रिया! ''बोले हंसकर ही
तुम अवरोधिनी नहीं, अब हो प्रबोधिनी।''[9]

मैथिलीशरण गुप्त की नारी में आत्मबल है वह भयभीत नहीं होती। उस पर किये गये अत्याचार एवं अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए तैयार रहती है। महापुरुषों के त्याग के पीछे नारी की छिपी वेदना को सामने लाते हैं और भारतीय संस्कृति के मर्यादाओं की रक्षा करते हैं–

'इस अन्याय समझ मरु, में कभी नहीं झूक सकती।
संशयशील युग की उसे भी परवाह नहीं हैं'।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त– साकेत प्रकाशन, चिरगाँव, झाँसी पृ0 01।
2. वही पृ0 सं0– 248।
3. मैथिलीशरण गुप्त– रेवती रमण–साहित्य अकादमी नयी दिल्ली, पृ0 41।
4. साकेत–मैथिलीषरण गुप्त– साकेत प्रकाशन, चिरगाँव झाँसी पृ0– 167।
5. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास–रामस्वरूप चतुर्वेदी–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृ0सं0– 98।
6. यशोधरा–मैथिलीशरण गुप्त– साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी पृ0 24।
7. वही पृ0– 38।
8. विष्णुप्रिया– मैथिलीशरण गुप्त– साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी पृ0 सं0– 42।
9. वही पृ0 सं0 83।